तिरुमल तिरुपति देवस्थान

बालसप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका

मई-2020

सप्तगिरि का परिशिष्ट

प्रह्लाद वरद नारसिंहा

तिरुमल तिरुपति देवस्थान - बालसप्तगिरि
ब्रह्मोत्सवों में बालकृष्ण

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

बालसप्तगिरि

सप्तगिरि का परिशिष्ट

मई-२०२०

वर्ष-०१
अंक-०३

विषयसूची

हिन्दू देवता	'विष्णु का कूर्म अवतार' श्री ज्योतीन्द्र के. अजवालिया	04
पन्निद्रालवार	पेयाल्वार श्री कमल किशोर हि. तापडिया	06
कन्नड हरिदासवरेण्य	श्री व्यासराय श्रीमती टी.त्रिवेणी	08
चित्रकथा	अभिषेक के लिए आकाश गंगा तेलुगु मूल - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु हिन्दी अनुवाद - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी चित्र - श्री के.द्वारकानाथ	10
बालनीति	विद्या प्राप्त की लगन श्री सी.सुधाकर रेड्डी	14
विशिष्ट बालक		16
'क्विज'	श्रीमती एन.मनोरमा	17
चित्रलेखन		18

मुखचित्र - प्रह्लाद वरद नारसिंहा।
चौथा कवर पृष्ठ - सीता शोक हरणकर्ता।

हिन्दू देवता

'विष्णु का कूर्म अवतार'

- श्री ज्योतीन्द्र के. अजवालिया

श्रीहरि विष्णु ने कूर्म अवतार क्यों लिया? आये हम इस कहानी में देखे। देव और दानव चचेरे भाई थे, फिर भी स्वर्ग के लिए दोनों के बीच युद्ध होता था। एक बार देव और असुर के बीच महासंग्राम हुआ, दुर्वासा के शाप से देवता हारने लगे और उसकी शक्ति कम हो गई। देवताओं इन्द्र को साथ लेकर ब्रह्माजी के पास गये, ब्रह्माजी सब को लेकर श्री विष्णु के पास आये। विष्णु भगवान ने कहा कि आप सब लोग दानवों के साथ संधी करले, और साथ मिलकर सब समुद्रमंथन करे। इसमें से जो अमृत निकलेगा उसका पान करने से आपकी खोई हुई शक्ति वापस मिलेगी।

देवराज इंद्र ने दैत्यराज बलि के साथ संधी करली, देव और दानव सब समुद्रमंथन के लिए तैयार हो गए। देव और दानव शक्तिशाली होकर भी मंदराचल पर्वत को समुद्र में न ला शके, तब श्रीहरि विष्णु ने अपने पार्षद गरुड़जी की मदद से मंदराचल को समुद्र में लाकर खड़ा कर दिया, भगवान अंतरध्यान हो गये। आधार नही होने कि वजह से पर्वत डूबने लगा। फिर से श्री महाविष्णु की सहायता ली तब भगवान ने कहा कि आप लोग चिंता मत करो मैं इस वक्त बहुत बडा कूर्म अवतार लेता हूँ, मेरी पीठ पर मंदराचल पर्वत को खडा करके वासुकि नाग कि रस्सी बना के सब लोग समुद्र का मंथन करे। इस में से १४ रत्नों में अमृत निकलेगा तब तक मेरा कूर्म अवतार रहेगा।

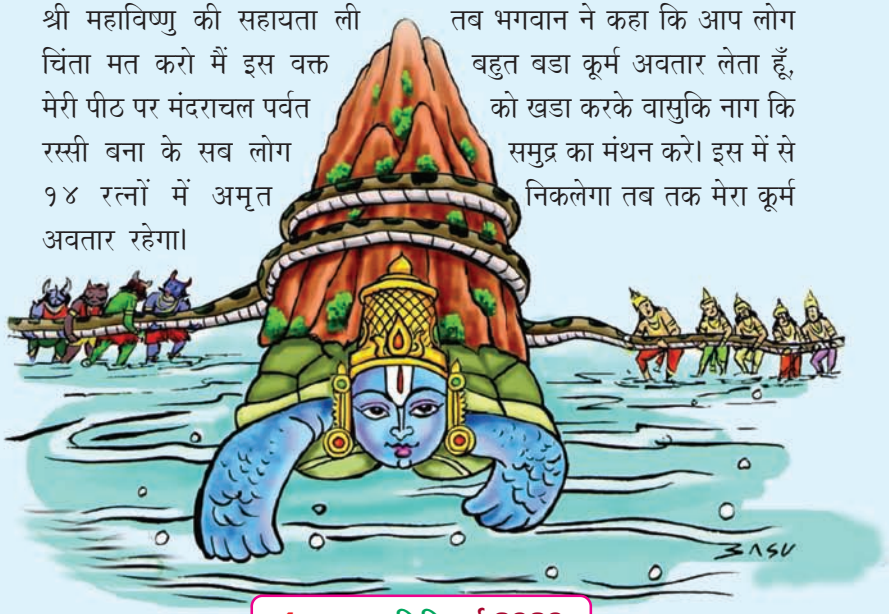

प्रभु ने वचन अनुसार कूर्म अवतार लिया, पीठ पर मंदराचल धारण किया, सब ने वासुकि नाग की रस्सी बनाकर पर्वत को लपेट लिया। दानवलोग पूंछ को अशुभ मानते हुए वे लोग मुह कि ओर रहे, देवतागण पूंछ कि ओर रहे। सबने मिलकर मंथन शुरू किया। सबसे पहले सबको नाश करने वाला जहरीला विष निकला, देवता की विनती से सदाशिव ने अपने कंठ में धारण कर लिया। तब से वे 'नीलकंठ' नाम से प्रचलित हुआ। साथ में उच्चैस्त्रवा अश्व, ऐरावत हाथी, कौस्तुभमणी, कामधेनु गाय, कल्पवृक्ष, देवी लक्ष्मी, अप्सरा रंभा, पारिजात, वारुणीदेवी, शंख, चंद्र और अमृत कुंभ और महावैध्य धन्वंतरि निकला। अमृत को पाने के लिए देव-दानव में लड जगड हुई। तब विष्णु ने बहुत ही सुंदर मनमोहक ''मोहिनी'' रूप धारण किया दानव लोग मोहिनी में मोहित हो गया।

मोहिनी ने देव और दानव कि अलग हारमाला कर दी, सबसे पहले देव को अमृत पिला दिया दानव वंचित रह गये। विष्णु भगवान मोहिनी से असल रूप में आये तब दानव को लगा कि हमारे साथ कपट हुआ। फिर से संग्राम हुआ तब नारदजी ने दोनों पक्ष में संधी करवाई।

श्रीहरि विष्णु ने कूर्म अवतार लेकर १४ रत्न की भेंट दी और सृष्टी के लिये देवताओं को अपनी शक्ति वापस दिलवाई।

जय श्रीमन्नारायण!

पन्निद्दरालवार

पेयाल्वार

(महद्योगी या महायोगी)

- श्री कमल किशोर हि. तापडिया

मैलाद्रिकेशवस्याग्रे कूपे चलति ह्वये।
रक्तोत्पले नंदकांशान्त संजज्ञे महदाह्वय।।

''मैंने श्रीलक्ष्मीजी समेता मैलापुर के स्वामी श्री आदिकेशव भगवान का साक्षात्कार किया है।'' इस प्रकार कहकर कूप के अंदर के लाल कमल से अवतार लेनेवाले श्री महदाह्वययोगी की मैं सेवा करता हूँ। जो इन्दिरारमण भगवान के चरणारविन्दों में मनोहर प्रेममयी भक्ति के कारण भ्रान्तयोगी के नाम से भी प्रसिद्ध है। ऐसे श्री महदाह्वय सूरी को प्रणाम करता हूँ। जिन्होंने सिद्धार्थ नामक सम्वत्सर के आश्विन मास में वरुण क्षेत्र स्थित मयूरपुरी में लाल पुष्प के गर्भ से अवतार लिया और जो भगवान की नन्दक नामक खड्ग के अवतार हैं।

इनके हृदय में भगवद्भक्ति की उत्कटता और विशेषता अधिक रही अतः इनका एक प्रसिद्ध नाम श्रीमहाचार्य भी है।

भगवान श्रीमन्नारायण के चरणारविन्द में भ्रमर के समान सदा भ्रमण करते रहने से इनको भ्रांतयोगी भी कहते हैं।

योगी स्वतःसिद्ध परमात्मा के दास रूपी मुख्य रस के रसिक, भगवद्भक्ति तथा ज्ञान वैराग्य से सदा सम्पन्न थे।

सत्त्वगुण के अनुभव से सम्पादित कैंकर्य के सुरस को पीने में सदैव तत्पर रहकर, शब्दादि विषयों से सदैव अपरिचित रहे, यानी परमेकांतिक स्थिति में इनका जीवन पूर्ण हुआ।

ये अयोनिज थे। भगवान श्री लक्ष्मीनारायण की कृपा से ये पूर्णज्ञान सम्पन्न तथा सभी तत्त्वार्थों से सुपरिचित भूमण्डल पर भ्रमण किया करते थे।

श्री महायोगी ने मुन्नान तिरु अन्दादि नाम से १०० प्रबन्ध की रचना की। अपने प्रबन्ध में श्रीरंगम, वेंकटाद्रि, मयूर नगरी आदि १५ दिव्यदेशों के भगवान का मंगलाशासन किया है।

महायोगी सूरी सरोयोगी और भूतयोगी सूरी के समकालीन है।

- श्री स्वामीजी ने पराशरादि मुनियों के समान शास्त्रार्थ की रीति से तर्कयुक्त अनेकों वैदिक एवं शास्त्रीय प्रमाण देकर श्रीमन्नारायण ही परात्पर वस्तु है, यह निर्णय किया। जिसको श्रवण कर भक्तिसारयोगी उनके शिष्य बन गए।

- श्री महदयोगी ने विश्वक्सेन भगवान की कृपा से श्री भक्तिसारयोगी का समाश्रयन किया और अष्टांगयोग तथा शरणागति की शिक्षा प्रदान की।

- श्री पिल्लै लोकाचार्य स्वामीजी अपने व्याख्यान में कुछ रमणीय भाव बताते है कि - मुदल आल्वारों को संप्रदाय में उसी प्रकार माना जाता है, जिस प्रकार प्रणव (ॐ कार) को आरंभ के रूप में माना जाता है।

- श्री वरवरमुनी स्वामीजी अपनी उपदेश रत्न माला (७ पाशुर) में बताते हैं कि - यह तीन आल्वार अन्य ७ आल्वारों से पहले उत्पन्न हुए और अपने दिव्य तमिल पाशुरों से इस जगत को प्रकाशित किया। इनके ऐसे महानतम कार्यों के फलस्वरूप ही, इन्हें मुदल आल्वार, ऐसे नाम से प्रसिद्धि प्राप्त हुई।

शिक्षा - भगवत्प्राप्ति यही मनुष्य जीवन का एकमात्र उद्देश्य हैं। सांसारिक लोगों से दूर रहकर भगवत्प्रेमी महात्माओं का संग करके अपने जीवन को भगवान को प्राप्त करके सफल बनाना।

भगवत चिन्तन का भ्रमण करके जन-जन तक सन्देश पहुँचाना।

कन्नड
हरिदासवरेण्य

श्री व्यासराय

तेलुगु मूल - श्री एस.नागराजाचार्य
हिन्दी अनुवाद - श्रीमती टी.त्रिवेणी

बालक! ''कृष्णा नी बेगने बारो'' नाम की कीर्तना को संगीत विभावरियों एवं भरत नाट्य प्रदर्शनों में सुना होगा। श्री व्यासराय ने उस गीत की आलापना की। इस गीत को श्री व्यासराय ने गायन करते समय श्रीकृष्ण बालक की तरह नाचता था, इस प्रकार उस समय इस दृश्य को देखे हुए लोग बताये थे। व्यासमुनि मध्वमत को उद्धरण किए हुए व्यक्ति की तरह, श्री पुरंदरदास का नाम बोलते हुए श्री मध्वाचार्य के ग्रंथों को दुनिया में प्रसिद्ध कराया हुआ, लोगों में धार्मिक प्रवृत्ति, ज्ञान भक्ति एवं वैराग्यों को धर्म जागरुकता करानेवाले कहते हैं। चन्द्रिका ग्रंथ को लिखकर चन्द्रिकाचार्य की तरह प्रसिद्ध हुए। श्रीपादराय के मार्ग को अनुसरण करनेवाले ये भी पूजा समय में भागवत संप्रदायानुसार सुस्वर कंठ से श्रीकृष्ण की लीलाओं को गायन करके श्री पुरंदरदास के लिए गुरु बने। श्री व्यासराय, ब्रह्मण्यतीर्थजी के शिष्य थे। इनके माता-पिता लक्ष्मीदेवी एवं रामाचार्य थे। श्री व्यासराय बचपन में ही श्री ब्रह्मण्यतीर्थ के पास, उसके बाद श्रीपादराय के पास विद्याभ्यास आरंभ करके द्वैत, वेदांत तत्त्वों को पूरे के पूरे अध्ययन किया। इनके ग्रंथ विद्वानों के लिए पाठ्यपुस्तकें बनीं।

व्यासरायजी बड़े महिमा भरित व्यक्ति थे। नववृंदावन के मध्य में इनके बृंदावन प्रकाशमान होते हुए देखनेवालों को भक्ति भावना के साथ-साथ बहुत ही आकर्षण की तरह विराजमान हो रहे हैं। चंद्रिकाचार्य की तरह ख्याति प्राप्त किए श्री व्यासरायजी ने श्री पुरंदर, कनकदास जी के लिए प्रत्यक्ष गुरु थे। अपने जीवन में कई महिमाओं को परोपकारार्थ के लिए दिखाया गया। आजकल मुख्य रूप से देश के गाँव-गाँव में श्री हनुमानजी के सभी प्राचीन मंदिर हनुमान भीम मध्वावतार की भावना को दिखाई पड़ने की तरह ७०० के ऊपर शिलामूर्तियों की स्थापना की। हंपी में स्थित यंत्रोद्धारक हनुमानजी इनकी वजह से ही पूजा की गई। वैसे ही नहीं उस समय सालुवा नरसिंहारायजी को ब्रह्महत्य पाप संभवित होने पर श्रीपादरायजी उसको निर्मूल करने के बाद तिरुमल

श्रीनिवास भगवान की पूजा करने के लिए उस राजा ने श्रीपादरायजी से विनती की। उस राजा की इच्छा के अनुसार श्री व्यासराय १२ साल श्रीनिवास के लिए शास्त्र सहित उदयास्तमान में मनानेवाली सभी सेवाओं को अपने स्वहस्तों से करने के बाद, पुराने अर्चकों की संतान आने पर उनको फिर से श्रीनिवास भगवान को अर्पित किया।

ये ही न होकर विजयनगर साम्राज्य को शासित किए हुए धार्मिक प्रभु श्रीकृष्णदेवरायजी को 'कुहू योग' नाम का एक अमंगल एवं घातक योग आने का पता करानेवाले ये व्यासयोग थे। 'न विष्णुः पृथ्वीपतिः' विष्णवंश संभूत राजा की रक्षा करना, उसमें धार्मिक प्रभु की रक्षा करना धर्म मानकर तुरन्त उस राजा के पास गया। श्रीकृष्णदेवराय के पूरे राज्य को सिंहासन सहित आपने दान के रूप में प्राप्त करके, उस 'कुहू योग' खतरे के घंटे चले जाने के बाद फिर से उस राजा को उस राज्य को वापस लौटाए हुए महान त्याग प्रधाता थे। वैराग्यपुंगव ये व्यासरायजी थे। श्रीकृष्णदेवरायजी के द्वारा इनको दिए गए गौरव, सम्मान आजकल भी मठ में देख सकते हैं।

श्री व्यासरायजी ने लोगों में धार्मिक प्रवृत्ति और जागरूकता को जगाया। भक्ति एवं वैराग्यों को उपदेश किया। दीनों के प्रति, पतितों के प्रति एवं सभी धर्मों के प्रति धार्मिक दृष्टि की भावना को जगाकर उनको उन्नति के मार्ग में लाए हुए व्यक्ति थे। भागवत धर्म को भली-भांति कन्नड पद पद्यों से प्रबोध किया गया। महापाप होनेवाले जूरत्व, चोरत्व एवं क्रूरत्वों के बारे में बताते हुए कहा है कि - इन पापों को मालूम होकर या न मालूम होकर किए हुए लोग श्रीकृष्ण के सामने शरणागत में आकर पश्चाताप की बृद्धि से प्रार्थना करने से इस कलियुग में यज्ञयागादि, व्रतादि से भी अधिक फल मिलते हैं। उस प्रार्थना को सीमित मात्रा में पश्चातप्त होकर उसके बाद, उन पापों के पास न जाना ही काफी है। उदाहरण के लिए ''जारत्वमनु माडिद पापगलिगेल्ला...'' जारत्व पाप को 'हेगोपीजनजार' के नाम से, चोरत्व पाप को 'हेनवनीतचोर' के नाम से, क्रूरत्व पाप को 'कंसमर्दन' के नाम से हरदिन करनेवाले छोटे-छोटे पापों के लिए 'पतित पावन' बोलने से काफी है, वही उनकी रक्षा होती है। श्रीकृष्ण को 'सिरि कृष्ण' कहते है। सिरिकृष्ण इनके अंकित नाम है।

चित्रकथा

अभिषेक के लिए आकाश गंगा

तेलुगु में -
श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
हिन्दी में - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी
चित्र - श्री के.द्वारकानाथ

श्री यामुनाचार्यजी के आदेशानुसार श्री वेंकटेश्वर स्वामी के अभिषेक के लिए तिरुमलनंबी (श्रीशैलपूर्ण) पापनाशनम् से हर दिन श्रद्धा तथा भक्ति के साथ पवित्र जल ला रहे हैं। एक दिन, एक शिकारी उनके सामने पडा...

उस प्रांत में जाकर दोनों ने पाया कि वहाँ पानी नहीं है। तुरंत शिकारी ने बाण से पर्वत पर बाण छोडा। उसी समय स्वछ जलधारा फूट पड़ी।

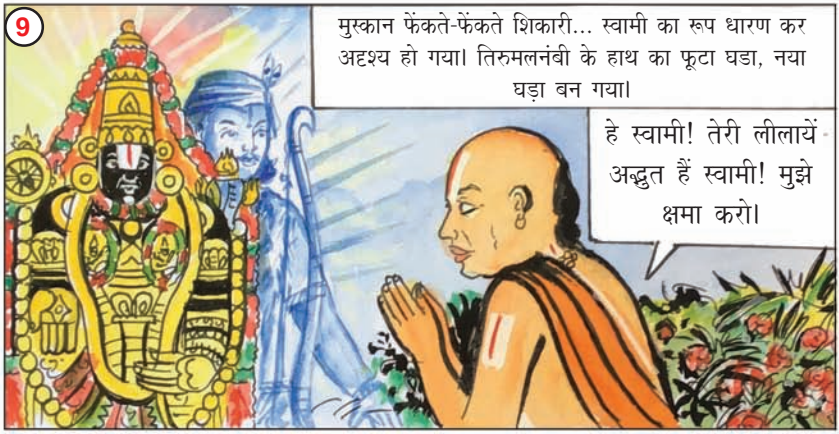

ध्यानपूर्वक देखो, तुम्हें पता चलेगा।
पता चली है। शिकारी नही! मेरा स्वामी है!
8
9
मुस्कान फेंकते-फेंकते शिकारी... स्वामी का रूप धारण कर अदृश्य हो गया। तिरुमलनंबी के हाथ का फूटा घडा, नया घड़ा बन गया।
हे स्वामी! तेरी लीलायें अद्भुत हैं स्वामी! मुझे क्षमा करो।
तिरुमलनंबी नये घडे में आकाश गंगा का जल भरकर आनंदनिलय पहुँचे। तब भगवान स्वयं का अर्चक स्वामी में आवाहन हुआ।
10
अभी से मेरा अभिषेक केलिए आकाश गंगा जल ही उपयोग कीजिए!
गोविंदा! गोविंदा!

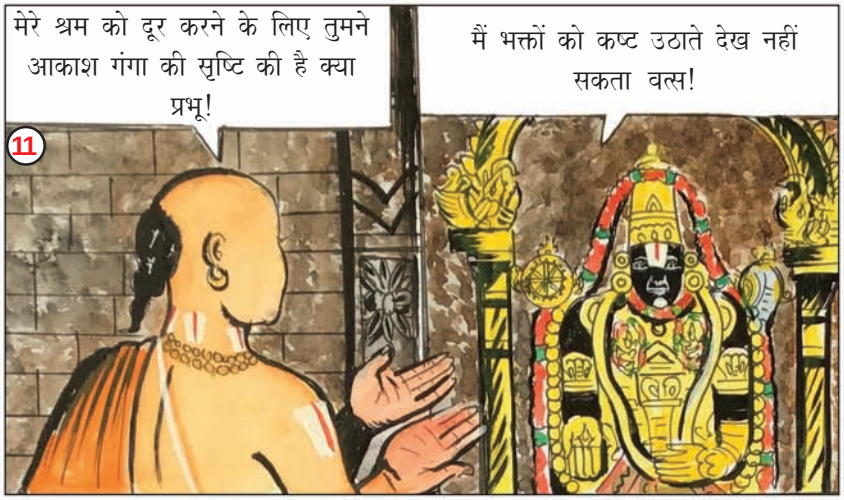

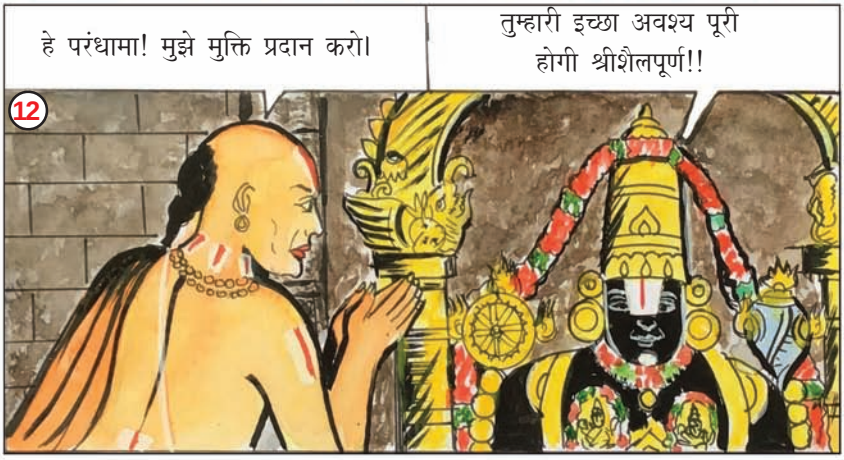

समय के साथ-साथ श्रीशैलपूर्ण, 'तिरुमलनंबी' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। ये श्रीरामानुजाचार्य के मामा हैं। इस भागवतोत्तम की यादगार में 'अध्ययनोत्सव' की समाप्ति के संदर्भ में, तिरुमल पर 'तन्नीरमृद उत्सव' के नाम से उत्सव मनाया जाता है। यह एक संप्रदाय बनी है।

स्वामिपुष्करिणी में स्नान करने के परिणामस्वरूप धर्मगुप्त का पागलपन कैसे दूर हुआ था, इसका विवरण आगामी पत्रिका में...

स्वस्ति!!

बालनीति

विद्या प्राप्त की लगन

- श्री सी.सुधाकर रेड्डी

काशी के एक संत जो वृद्धावस्था में आने के कारण कुछ दिनों से चिंतित थे कि उनके पास जो ज्ञान की भंडार है, वह कैसे अपने भावी पीढ़ी को कैसे सुपुर्द करें। इसके लिए वह बहुत दिनों से ऐसे शिष्य का चयन कर रहे थे जो उनका उत्तराधिकारी बन सके।

संत एक दिन सभी छात्रों को लेकर दूर कही जंगल जान के लिए निकले, जहाँ वह अपनी विद्या अपने छात्रों को दे सके। संत चलते रहे दुर्गम, पहाड-पठार आते गए नदियाँ आई किंतु संत नहीं रुके। एक दिन हुआ, दो दिन हुए, तीन दिन हुए, वह निरंतर चार दिन, चार रातें चलते रहे।

इसी बीच रास्ते में कुछ छात्रों ने शिक्षा लेने का विचार बदल दिया और वापस अपने-अपने घर लौट गए।, कुछ छात्र दो दिन साथ चलते रहे फिर वापस लौट गए। कुछ छात्र भूख-प्यास पीडित होकर वापस अपने घर लौट आए और कुछ रास्ते में ही बेहोश हो गए। किंतु संत नहीं रुके। वे निरंतर चलते रहे। अंततः ऋषि एक कुटिया में पहुँचे। अब केवल उनके पास तीन ही शिष्य थे। वे उन शिष्यों को लेकर उस कुटिया में गए और प्रसन्नतापूर्वक कहा- मैं तुम्हें अपनी सारी विद्याएँ सुपुर्द करुँगा। तुम्हें चावल से सोना बनाने की विद्या का अभ्यास कराऊँगा।

यह कहते हुए उन्होंने अपने तीन शिष्यों को चावल का एक-एक दान दिया और मंत्र पढ़ने को कहा। दो शिष्य मंत्र पढ़ते-पढ़ते बेहोश

हो गए। जिसके कारण उसका मंत्र अधूरा रह गया और सोना नहीं बन सका। किंतु तीसरे शिष्य ने पूरा मंत्र पढ़कर उस चावल से सोना बना दिया। क्योंकि इस विषय में ज्ञान के लिए इस शिष्य की इच्छा शक्ति थी, लगन थी जिसके कारण भूख, प्यास, थकान सभी पर शिष्य ने विजय प्राप्त कर लिया था।

वह शिष्य अपने गुरु के कहे हुए हर शब्द का, हर एक आज्ञा का पालन करता था। जिसके कारण वह अन्य शिष्यों से अलग था। संत ने आनंद प्रकट करते हुए अपने शिष्य को संपूर्ण ज्ञान उनकी झोली में डाल दिया। क्योंकि यह शिष्य अपने गुरु के ज्ञान का सच्चा अधिकारी था।

नीति : ज्ञान प्राप्त करना कोई साधारण कार्य नहीं है, इसके लिए एकनिष्ठ का भाव आवश्यक है। अपने गुरु के समक्ष में सर्वस्व समर्पित कर लगन एवं ध्यान से ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

विशिष्ट बालक

नाम : चि. एल्लपल्लि. चक्रधर

कक्षा : दूसरी कक्षा

माताजी : श्रीमती डी.श्रीदेवी, वरिष्ठ ऑफ सेट प्रिंटर

पिताजी : श्री ई.वेंकटरमेश, वरिष्ठ जे.सी.ओ., भारतीय सेना

विद्यालय : मेक मैं बेबी जीनियस, तिरुपति

प्राप्त किए गए पुरस्कारों का विवरण :

१) एल.के.जी.

अ) २२ अप्रैल, २०१७ - २१० वस्तुओं के नामों को ७८ सेकंड्स में बताया गया।

- जीनियस बुक ऑफ रिकार्ड
- वंडर बुक ऑफ रिकार्ड

२) अ) ५ जून, २०१७ - २०० छात्रों द्वारा सौ वेमना की कविताएँ सुनाई गई।

- जीनियस बुक ऑफ रिकार्ड।

आ) ३ जून, २०१८ - ३०० छात्रों द्वारा १०० वेमना की कविताएँ सुनाई गई।

- जीनियस बुक ऑफ रिकार्ड
- वंडर बुक ऑफ रिकार्ड

१) वेमन शतक रत्न पुरस्कार - यू.के.जी.

२) गीताबालपुरस्कार (१२, १५वें अध्यायों के लिए) - यू.के.जी.

३) क्षणिक गणित पुरस्कार - २० टेबल्स - पहली कक्षा।

'क्विज'

आयोजक - श्रीमती एन.मनोरमा

१) देवताओं के राजा इंद्र ने कौन से ऋषि की हड्डियाँ आयुध के रूप में पाई?

अ) व्यास　　आ) वाल्मीकि

इ) दधीचि　　ई) ऋष्यश्रृंग

२) ग्रहणकाल में खुला हुआ मंदिर किस प्रांत में है?

अ) तिरुमल　　आ) काणिपाकम्

इ) श्रीशैलम्　　ई) श्रीकालहस्ति

३) कुंति देवी किस देवता की प्रार्थना से कर्ण का उद्भव हुआ था?

अ) वायु　　आ) अग्नि

इ) सूर्य　　ई) वरुण

४) श्रीमहालक्ष्मी वैकुंठ को छोडकर भूलोक पधारकर कौन सी जगह पर विराजित है?

अ) तिरुमल　　आ) तिरुचानूर

इ) श्रीविल्लीपुत्तुर　　ई) कोल्हापुर

५) श्रीमहाविष्णु के दशावतारों में सर्वप्रथम अवतार कौन सा है?

अ) श्रीकृष्ण　　आ) श्रीराम

इ) वराहस्वामी　　ई) मत्स्यावतार

६) दमयंती के पती का नाम क्या है?

अ) आकाश राजा　　आ) नल

इ) कंश　　ई) अर्जुन

७) तिरुमल में हर शुक्रवार संपन्न होनेवाली साप्ताहिक सेवा क्या है?

अ) अभिषेक　　आ) एकांतसेवा

इ) सुप्रभात　　ई) अर्चना

८) भीष्मपितामह की माताजी का नाम क्या है?

अ) गंगा　　आ) यमुना

इ) गोदावरी　　ई) कावेरी

उत्तर - १) इ　२) ई　३) इ　४) ई　५) ई　६) आ　७) अ　८) अ

चित्रलेखन

इस चित्र को रंगों से अब भरें क्या?

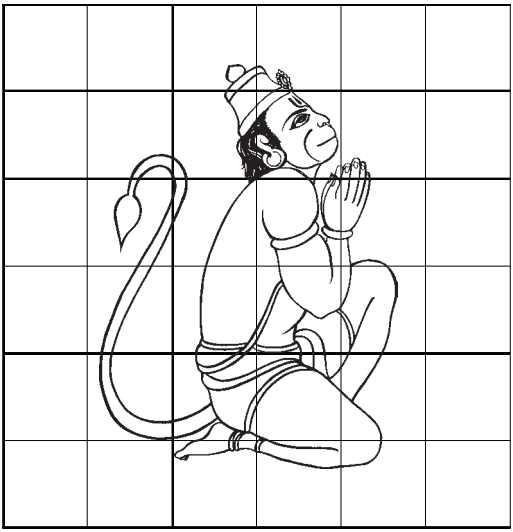

ऊपर सूचित चित्र को नीचे के डिब्बों में खींचिये -

तिरुमल में वेदपारायण करते हुए वेद विद्यार्थी वृंद

SAPTHAGIRI (HINDI) ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams printing on 25-05-2020. Regd. with the Registrar of Newspapers under "RNI" No.10742. Postal Regd.No.TRP/11- 2018-2020, Licensed to post without prepayment No.PMGK/RNP/WPP-04/2018-2020